बिलट महथा आदर्श महाविद्यालय, बहेड़ी

(ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

वर्ग : स्नातक तृतीय खण्ड.									पृष्ठ : 01		दिनांक : 01.10.2020
प्रतिष्ठा	✓	अनुषंगिक	×	अनुपूरक	×	रा०भा० हिन्दी	×	अहिन्दी	×	हिन्दी	पत्र : VI
व्याख्यान का विषय : आदिकालीन हिन्दी भाषा के विकास का संक्षिप्त परिचय - II											
प्राध्यापक :										— डॉ. उमेश कुमार	

हिन्दी भाषा का विकास 'शौरसेनी अपभ्रंश' से हुआ जिसका प्रारंभिक काल सन - 1000 ई० है। इसे 'उत्तरकालीन अपभ्रंश', पुरानी हिन्दी अथवा 'देशभाषा' आदि नामों से जाना जाता है। ग्रॉ. धीरेन्द्र वर्मा ने आधुनिक आर्यभाषा हिन्दी के लगभग एक हजार वर्ष के इतिहास को तीन कालों में विभाजित किया है -

आदिकाल — 1000 ई० से 1500 ई.
मध्यकाल — 1500 ई० से 1800 ई.
आधुनिककाल - 1800 ई० से वर्तमान काल तक

आदिकाल राजनीतिक दृष्टि से आंतरिक कलह और विदेशी आक्रांताओं का काल था। इस समय राजपूत राजाओं का पराजय ~~का~~ तथा सम्पूर्ण देश के ~~पराभव~~ पराजय का काल था। हिन्दी प्रदेश कहा जाने वाला क्षेत्र पश्चिम में चौहान वंश, पूर्व में गहौर वंश तथा दक्षिण-पश्चिम में अन्य राजपूत राजाओं के अधीन विभाजित था। दिल्ली के शासक पृथ्वीराज चौहान की सत्ता ही केन्द्रीय सत्ता थी जिसे 12वीं सदी के अंतिम चरण में मुहम्मद गोरी ने पराजित करके अपनी सत्ता स्थापित की थी। बाद में उसने जयचंद्र को भी पराजित किया। इस प्रकार हिन्दी क्षेत्र पर मुस्लिम शासन स्थापित हुआ। तत्कालीन समय में एक बोली राजस्थानी के 'डिंगल' और ब्रजभाषा-प्रभावित 'पिंगल' का प्रचलन था ये भाषाएँ उस समय साहित्यिक अभिव्यक्ति की प्रमुख भाषाएं थी। इनके अलावा दिल्ली, मेरठ, बिजनौर के क्षेत्र, पश्चिमी रूहेलखंड (बरेली संभाग) तथा अंबाला एवं पटियाला के पूर्वी भाग में प्रचलित बोलचाल की भाषा को 'खड़ीबोली' कहा जाता है। इसी को पुराने समय में 'हिंदुई' तथा 'हिंदवी' आदि नाम दिए गये।

अमीर खुसरो ने 'हिन्दवी' शब्द का प्रयोग हिन्दी भाषा के लिए किया है। 'खालिक बारी' नाम से उन्होंने फारसी-हिंदी शब्दकोश लिखा है। उन्होंने लिखा "तुर्क हिंदुस्तानियम मन हिंदवी गोयम जवाब।" अर्थात मैं हिंदुस्तानी तुर्क हूँ, हिंदवी में जवाब देता हूँ। खुसरो ने फारसी और हिन्दी भाषा का मिश्रण कर जो कविताएँ लिखीं वह 'रेख्ता भाषा' में लिखित मानी जाती है। यथा - "जेहाल मस्की मकुन तगाफुल दुराय नैना बनाए बतियाँ" खुसरो ने अरबी-फारसी के मिले हुए रूप को ही 'हिंदी' अथवा 'हिंदवी' कहा है। 'हिंदवी' शब्द का प्रयोग आधुनिक काल के इंशा अल्ला खाँ तक प्रचलित रहा।

1500 ई. से 1800 ई० तक का काल मध्यकाल के नाम से जाना जाता है। इस समय तक देश में पूरी तरह से मुस्लिम साम्राज्य स्थापित हो चुका था। इस समय हिन्दी भाषा का एक अन्य रूप 'दक्खिनी हिंदी' का भी था जिस पर फारसी शब्दों

का प्रभाव पड़ा था। दक्खिनी हिंदी के शाह मीराजी तथा शेख अशरफ आदि कवियों ने इसे 'हिंदी' अथवा 'हिंदवी' कहा है। मध्यकाल में साहित्य और कलाओं को पनपने का अवसर मिला। इस समय साहित्य की तीन भाषाओं का उपांग स्पष्ट दिखाई देता है। - यथा - ब्रज, ~~अवधि~~ अवधी और खड़ी बोली "। उस समय के साहित्यिक अध्ययन से पता चलता है कि ब्रज में अधिकतर कृष्ण काव्य रचे गये और अवधी में राम काव्य तथा सूफियों की प्रेम गाथाएँ लिखी गई।

15 वीं शताब्दी में सूफी कवि मलिक मुहम्मद जायसी ने अवधी में लिखा है - "तुर्की अरबी हिंदवी, भाषा जेती आहिं।
जामें मारग प्रेम का सबै सराहैं ताहि॥"

इससे स्पष्ट होता है कि उस समय तक अवधी, ब्रज और खड़ीबोली की सम्मिलित संज्ञा 'हिंदवी' अथवा हिंदी हो गई थी।

— उमेश कुमार